'संगीत में ब्रजक्षेत्र के अवनद्ध वाद्य-वादकों का योगदान (पखावज वाद्य के विशिष्ट सन्दर्भ में)'

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा की संगीत विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित

रुपरेखा

2012

निर्देशिका :

डॉ0 नीलू शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर (तबला)

संगीत विभाग

शोधार्थिनी :

दिव्या श्रीवास्तव

संगीत विभाग (तबला)

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रो. (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो. (श्रीमती) उर्मिला आनन्द

(संगीत विभाग) कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा - 282005

भूमिका

भारतीय संस्कृति में ब्रज भूमि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं धार्मिक क्षेत्र है। ब्रजक्षेत्र ने भारत की विराट संस्कृति को उन्नतशील व समृद्धशाली बनाने में अपना विशेष योगदान दिया है। इसलिए ब्रज की पवित्र भूमि अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक, कलात्मक एवं सांगीतिक अभिव्यक्ति के लिए सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध रही है। यह साहित्य, कला और संगीत के विकास में अग्रणी है। ब्रज का संगीत वह मानसी गंगा है, जिसमें अवगाहन से मन पवित्र होता है, तन में स्फूर्ति आती है और ध्यान मानव के जीवन रस पर केन्द्रित हो जाता है। ब्रज भूमि, जिसको श्री कृष्ण जी ने अपने बांसुरी वादन व रास नृत्य के द्वारा अविभूत किया। इसलिए श्री कृष्ण जी की लीला भूमि ब्रज का कण–कण संगीतमय रहा है। अर्थात् संगीत पर ब्रज वसुधा की अमिट छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है।

ब्रज संगीत में गायन व वादन की अपनी–अपनी समृद्ध व गौरवशाली परम्परा रही है। इनमें यदि वादन विधा पर दृष्टिपात करें तो संगीतात्मक ध्वनियों को प्रकट करने के लिए वाद्यों को चार वर्गों में विभाजित किया गया– तत्, घन, सुषिर व अवनद्ध। इन चतुर्विद्ध वाद्यों में से अवनद्ध वाद्य मुख्य रूप से ताल वाद्य कहलाते हैं। प्राचीन काल से ही अवनद्ध वाद्य का प्रयोग गायन, वादन व नृत्य की संगति हेतु किया जाता रहा है। अवनद्ध वाद्यों का प्रयोजन गीत–वाद्य का उपरंजन करना, स्थायित्व प्रदान करना, सौन्दर्य में वृद्धि करना, ध्वनि में मृदुता और गम्भीरता लाना इत्यादि था। अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में पखावज अत्यंत महत्वपूर्ण वाद्य है। यह वाद्य ध्रुपद गायन शैली के साथ ही प्रचार में आया। तत्कालीन संगीत

की विधाओं की संगत हेतु सर्वाधिक उपयुक्त वाद्य पखावज था। प्रसिद्ध लेखिका **डॉ0 आबान ई0 मिस्त्री जी** ने अपनी पुस्तक **'पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ'** में लिखा है कि 'पखावज का प्रचलन हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण के भक्ति पदों के साथ ब्रज भूमि में हुआ था।'

पखावज वाद्य श्रम साध्य वाद्य है, तथापि पखावज वादन के क्षेत्र में अनेक ऐसे महान कलारत्न पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपनी दीर्घ साधना, प्रतिभा व अप्रतिम कौशल के द्वारा इस क्षेत्र में अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया। इन गुणी वादकों ने अपनी आजीवन तपश्चर्या के द्वारा इसे अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया और अत्यंत सम्मानजनक स्थान दिलाया। तब से लेकर वर्तमान तक अनेक वादकों की परम्परा चली आ रही है, जो भिन्न–भिन्न घरानों के रूप में सम्पूर्ण देश में सुप्रसिद्ध है।

पखावज वादन में ब्रजक्षेत्र अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ अनेकों पखावज वादक रहे हैं, जिन्होंने इस भूमि की सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्कृति को संरक्षित रखने में अपना अपूर्व योगदान दिया है। ब्रजक्षेत्र में प्रचलित वादकों की परम्परा कोरिया घराने के रूप में विकसित हुई। इस क्षेत्र के वादक, पखावज वाद्य के प्रचार–प्रसार व परम्परा के निर्वाह में पूर्ण रुप से संलग्न हैं। इन पखावज वादकों ने श्रम की साधना करते हुए इसकी स्वतंत्र वादन शैली विकसित की एवं इसमें नवीन प्रयोग करते हुए अनूठी प्रस्तुति की है। अपने श्रम से ही इन वादकों ने राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस वाद्य को ख्याति प्रदान करने में अपना सहयोग दिया।

अस्तु उक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए **'संगीत में ब्रजक्षेत्र के अवनद्ध वाद्य–वादकों का योगदान (पखावज वाद्य के विशिष्ट सन्दर्भ में)'** विषय का चयन किया गया है।

<u>विषय कथन</u> :–

'संगीत में ब्रजक्षेत्र के अवनद्ध वाद्य–वादकों का योगदान (पखावज वाद्य के विशिष्ट सन्दर्भ में)'

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u> :–प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

- ब्रज संगीत के अवनद्ध वाद्यों में पखावज वाद्य का अध्ययन।
- ब्रज संगीत के ईश्वरोपासना एवं ख्याति प्राप्त पखावज वादकों के परिचय एवं योगदान का अध्ययन।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रज संगीत में पखावज वाद्य की स्थिति का अध्ययन।

<u>परिसीमांकन</u> :–

प्रस्तुत शोध कार्य समय सीमा को देखते हुए ब्रज क्षेत्र के कम से कम दस पखावज वादकों के अध्ययन तक सीमित रहेगा।

<u>अध्ययन विधि</u> :–

विश्लेषण, साक्षात्कार, सर्वेक्षण व निरीक्षण विधि इत्यादि।

अध्ययन के स्त्रोत :–

विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन पुस्तकालयों, संग्रहालयों, दृश्य–श्रव्य सामग्री, इण्टरनेट एवं संगीत जगत के कलाकारों व विद्वानों से विचार–विमर्श एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा।

अध्ययन की रूपरेखा :–

प्रथम अध्याय – अवनद्ध वाद्य : उत्पत्ति, विकास एवं महत्व।

द्वितीय अध्याय – (अ) ब्रज क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि।

(ब) ब्रज क्षेत्र के संगीत में प्रयुक्त प्रमुख अवनद्ध वाद्य एवं वादक।

तृतीय अध्याय – ब्रज क्षेत्र संगीत के अवनद्ध वाद्यों में पखावज वाद्य : महत्व एवं शैलीगत विशेषताएँ।

चतुर्थ अध्याय – ब्रज क्षेत्र के संगीत में ईश्वरोपासना से सम्बद्ध पखावज वादकों का परिचय एवं योगदान।

पंचम अध्याय – ब्रज क्षेत्र के संगीत में ख्याति प्राप्त पखावज वादकों का परिचय एवं योगदान।

षष्ठ अध्याय – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रज क्षेत्र के संगीत में पखावज वाद्य की स्थिति।

सप्तम अध्याय – उपसंहार।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u> :–

- अंजू शर्मा, ब्रज संस्कृति में संगीत।
- डॉ॰ वंदना सिंह, ब्रज की सांगीत परम्परा।
- डॉ॰ आबान ई॰ मिस्त्री, पखावज और तबला के घराने एवं परम्राएँ।
- पं॰ केशव रघुनाथ तलेगाँवकर, सुलभ तबला वादन भाग–2।